Date :- 15/05/2020

(4) गति :- अभिनय में गति का बड़ा महत्त्व है। प्रत्येक पात्र की भूमिका में अभिनय करने वाले अभिनेता को विभिन्न गतियों में चलना आवश्यक हो जाता है। चोर या हत्यारा दबे पाँव पंजों के बल पर लम्बे-लम्बे डग भरते हुए चलता है। जबकि विदूषक हास्यापद गति से टेढ़ा-मेढ़ा चलता है। गति के अन्तर्गत ही भूमिका के पद और उसकी मर्यादा के अनुसार अभिनेता का रंगमंच पर प्रवेश, प्रस्थान परिक्रमा ऊपर चढ़ना या मंच के नीचे उतरना होता है।

(5). वाणी (speech) :- यूरोपीय नाट्यशास्त्रियों का मत है कि अभिनेता को अपनी वाणी पर पूरा अधिकार होना चाहिए। वह उसे तार, कम्पित से स्थिर और गम्भीर मन्द से तीव्र गति होकर साथ ही भावनुसार उतार-चढ़ाव भी दिखा सके। उसकी वाणी इस प्रकार सधी हुई होनी चाहिए कि उसे जिस कार्य की अभिव्यक्ति करनी है वह अर्थ और भाव उसकी वाणी से ही प्रकट हो जाये। प्रार्थना, निवेदन, माँग संकल्प, क्रोध, ईर्ष्या, उत्साह, आलस्य, विनोद उपहास, परिहास, व्यंग्य आदि को भावों के अनुसार प्रभावशाली ढंग से वाणी द्वारा अभिव्यक्त किया जाना चाहिए।